संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ सूची

1) प्रीति सेनगुप्ता, पूर्वा, आर.आर. शेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद, संस्करण 1986

2) प्रीति सेनगुप्ता, दिक् दिगत, आर.आर. शेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद संस्करण 1987

3) प्रीति सेनगुप्ता, सूरज संगे दक्षिण पंथे, आर.आर. शेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद, संस्करण 1989

4) प्रीति सेनगुप्ता, अंतिम क्षितिजों, आर.आर. शेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद, संस्करण 1990

5) प्रीति सेनगुप्ता, धवल आलोक धवल अंधार, आर.आर. शेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद, संस्करण 1992

6) प्रीति सेनगुप्ता, मन तो चंपानु फूल, आर.आर. शेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद, संस्करण 1993

7) प्रीति सेनगुप्ता, उत्तरोतर, आर.आर. शेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद, संस्करण 1994

8) प्रीति सेनगुप्ता, अेक पंखीनां पींछां सात-मध्य अमेरिकानी विचरणगाथा, आर.आर. शेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद, संस्करण 2000

9) माला वर्मा, यूरोप यात्रा संस्मरण, पीयूष प्रकाशन पटना, संस्करण 2002

10) प्रीति सेनगुप्ता, देवो सदा समीपे, आर.आर. शेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद, संस्करण 2003

11) प्रीति सेनगुप्ता, सुतर स्नेहनां, आर.आर. शेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद, संस्करण 2005

12) माला वर्मा, पिरामिडों के देश में, आनंद प्रकाशन कोलकाता, संस्करण 2006

13) प्रीति सेनगुप्ता, अपराजिता- सात खंड परना निबंधोनो संचय, रंगद्वार प्रकाशन अहमदबद, संस्करण 2007

14) प्रीति सेनगुप्ता, संबंधनी ऋतुओ, आर.आर. शेठनी कंपनी प्रकाशन अहमदाबाद, संस्करण 2010

15) माला वर्मा, अमेरिका में कुछ दिन, आस्था प्रकाशन कोलकाता, संस्करण 2010,

16) माला वर्मा, चीन देश की यात्रा, अमृत प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2011

17) माला वर्मा, आईये मलेशिया सिंगापुर थाईलैंड चलें, मांडवी प्रकाशन गाजियाबाद, संस्करण 2011

18) माला वर्मा, जापान यात्रा-वृत्तांत, अमृत प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2019

19) माला वर्मा, साउथ अमेरिका, अंजनी प्रकाशन- कोलकाता, संस्करण 2020

20) माला वर्मा, कंबोडिया वियतनाम, अंजनी प्रकाशन कोलकाता, संस्करण 2021

21) माला वर्मा, साउथ अफ्रीका यात्रा संस्मरण, अंजनी प्रकाशन कोलकाता, संस्करण 2022

22) माला वर्मा, इंग्लैंड आयरलैंड, अंजनी प्रकाशन कोलकाता, संस्करण 2023

23) माला वर्मा, अंटार्कटिका, अंजनी प्रकाशन कोलकाता, संस्करण 2023

24) माला वर्मा, स्पेन-पुर्तगाल, अंजनी प्रकाशन कोलकाता, संस्करण 2024

25) माला वर्मा, अजरबैजान, अंजनी प्रकाशन कोलकाता, संस्करण 2024

26) माला वर्मा, आर्कटिक ध्रुवीय भालू का देश, अंजनी प्रकाशन कोलकाता, संस्करण 2024

27) माला वर्मा, कोस्टल इटली, अंजनी प्रकाशन कोलकाता, संस्करण 2025

सहायक ग्रंथ सूची

1) सुरेन्द्र माथुर, यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास, साहित्य प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 1962

2) इन्दु जैन, पत्तों की तरह चुप, नेशनल पब्लिशिंग हाउस प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 1987

3) प्रो. अक्षय कुमार गोस्वामी, काव्य प्रभा, गिरिनार प्रकाशन मेहसाणा, संस्करण 2007

4) डॉ. अलका निकम वागदरे, नागार्जुन और नारायण सुर्वे के काव्य में प्रगतिशील चेतना, अभय प्रकाशन- कानपुर, प्रथम संस्करण 2007

5) प्रो. आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी, तुलनात्मक अध्ययन निकष एवं निरूपण, प्रकाशन संस्थान- नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2009

6) डॉ. हरी सिमरन कौर भुल्लर, समकालीन यात्रा वृत्तों में सांस्कृतिक संदर्भ, के. के. पब्लिकेशंस - दिल्ली, संस्करण 2009

7) डॉ. बिपिन चौधरी, प्रवासिनी प्रीति सेनगुप्ता, पार्श्व प्रकाशन अहमदाबाद, संस्करण 2013

8) डॉ. स्वीटी घुघरावाला, हिन्दी गुजराती दलित कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन, चिन्तन प्रकाशन- कानपुर, प्रथम संस्करण 2014

9) हनुमानप्रसाद शुक्ल, तुलनात्मक साहित्य सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य, राजकमल प्रकाशन- नई दिल्ली, संस्करण 2015

10) इन्द्रनाथ चौधुरी, तुलनात्मक साहित्य भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन- नयी दिल्ली, संस्करण 2018

11) दीपक पाटिल, यात्रा साहित्य का इतिहास, प्रशांत पब्लिकेशन जलगाव, संस्करण 2020

12) डॉ. बाबूराव देसाई, यात्रा साहित्य विधा शास्त्र और इतिहास, विकास प्रकाशन कानपुर, संस्करण- 2021

13) श्री प्रकाश शुक्ल, देश देश परदेस, सेतु प्रकाशन - नोएडा उत्तर प्रदेश, संस्करण 2023

14) राहुल सांकृत्यायन, घुमक्कड़ शास्त्र, किताब महल प्रकाशन-नई दिल्ली, संस्करण 2022

15) अज्ञेय, अरे यायावर रहेगा याद, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2023

16) निर्मल वर्मा, चिड़ों पर चाँदनी, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, संस्करण 2023

17) नासिरा शर्मा, जहाँ फव्वारे लहू रोते है, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, संस्करण 2021

18) असग़र वजाहत, अतीत का दरवाज़ा, राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन-दिल्ली, संस्करण 2018

19) अनुराधा बेनीवाल, आज़ादी मेरा ब्रांड, राजलमल प्रकाशन-नई दिल्ली, संस्करण 2022

20) प्रो. रीतारानी पालीवाल, जापान के विविध रंग-राग, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, संस्करण 2008

21) अनिल यादव, वह भी कोई देस है महाराज, अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.- ग़ाज़ियाबाद उ.प्र., संस्करण 2023

22) अनुराधा बेनीवाल, लोग जो मुजमें रह गए, सार्थक राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.- नई दिल्ली, संस्करण 2023

23) ममता कालिया, कितने शहरों में कितनी बार, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड- नई दिल्ली, संस्करण 2022

24) निर्मल वर्मा, शताब्दी के ढलते वर्षों में, वाणी प्रकाशन- नयी दिल्ली, संस्करण 2017

24) गोविंद मिश्र, धुंध-भरी सुर्खी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस प्रकाशन- नयी दिल्ली, संस्करण 1976

25) चंद्रभूषण, तुम्हारा नाम क्या है तिब्बत, अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.- ग़ाज़ियाबाद उ.प्र., संस्करण 2022

26) पंकज बिष्ट, ख़रामा-ख़रामा, अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.- ग़ाज़ियाबाद उ.प्र., संस्करण 2019

27) प्रो. नंद किशोर पाण्डेय, प्रो. दीपेन्द्रसिंह जाडेजा, गद्य मंजूषा, प्रभात प्रकाशन- नई दिल्ली, संस्करण 2021

पत्र-पत्रिकाएँ

1) भाषा
2) पुष्पगंधा

3) गद्य मंजूषा- साहित्य अमृत
4) मधुमती
5) वागर्थ

वेबसाइट

1) https://www.indiagolddays.com

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-40 VOLUME-5 IMPACT FACTOR- IIFS-9

ISSN-2454-6283 April-June, 2025

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

शोध-ऋतु

(Cosmos– 2019-4.649) Scopus Impact Factor (1.25) Thomson Reuters Edwin Impact Factor-2.88 ETC

https://doie.org/10.10687/shodhritu.2025415640

5

सम्पादक
डॉ. सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव

पत्राचार हेतु कार्यालयीन पता -
डॉ.सुनील जाधव,
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,
हनुमान गढ़ कमान के सामने,
नांदेड-४३१६०५, महाराष्ट्र

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

Open Transparent PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-40 | VOL- 5 | IIFS Impact-9 | ISSN-2454-6283 | April-June -2025|

(International Scientific Indexing-2.204), (Copernicus: 53.99) *(Cosmos-4.649)*

DOI Number - https://doie.org/10.10687/shodhritu.2025415640

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक
डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड
9405384672

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव, मुंबई

पत्राचार हेतु पता–
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड–431605

–डॉ.नीतू सिंह 52
19.मंगलमुखीयों के संघर्ष का यथार्थ : 'पोस्ट बॉक्स नं. 203–नाला सोपारा' 53
–डॉ. गंगाधर रामडगे 53
20.गोदान और मैला आँचल : एक दृष्टि 55
–डॉ.सुषमा कुमारी 55
21.विवाह संस्कार की कुछ चुनिंदा परंपराएँ 57
–बीणा कुमारी 57
22.भारतीय क्रान्ति (1857) की प्रकृति का अध्ययन 58
–डॉ.अमित सिंह 58
23.श्रमिक और राष्ट्रीय आंदोलन :– एक मूल्यांकन 61
–डॉ.सुबोध कुमार 61
24.आगरा में बौद्ध स्तूप : एक ऐतिहासिक विवेचनात्मक अध्ययन 63
–[1]प्रो.(डॉ0) लक्ष्मी गौतम, [2]जीतेश कुमार 63
25.गीता में सांख्य और योग : एक अध्ययन 64
–[1]शोभ नाथ, [2]डॉ.ऊदल कुमार 64
26.शब्द काव्यतावाद एवं शब्दार्थ काव्यतावाद– एक अध्ययन 66
–[1]सोनम, [2]डॉ.ऊदल कुमार 66
27.सोलह संस्कारों की मानव जीवन में उपादेयता 68
–डा. मयंकपाण्डेय, ... 68
28.शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के सन्दर्भ में संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन 71
–[1]मनोज कुमार, [2]अरूण कुमार कुलश्रेष्ठ 71
29.'पारिजातहरण' नाटकक वैशिष्ट्य 74
–डॉ.प्रभाष कुमार 74
30.'लेटाइत आँचर' नाटकक तात्विक विवेचन 76
–डॉ.राम सोगारथ यादव 76
31.यात्रा साहित्य में माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता का योगदान 78
–सागर देसले 78
32.स्वतंत्रता के पश्चात् बदलता भारतीय संसद का स्वरुप 80
–डॉ.दयावती देवी 80

ISSN-2454-6283 PEER Reviewed JOURNAL

21 हजार रुपैयामे स्थिर भेल छल से ओहि समयक अनुसार बहुत छल। निष्कर्षतः एहि नाटकमे वर्णित परिवेश स्वभाविक अछि।

उद्देश्य– नाटकक रचनाक उद्देश्य मनोरंजनक संग सर्वसाधारण कैं किछु संदेश प्रदान करब होइछ। एहि नाटकक उद्देश्य समाजमे तिलक दहेज रूपी कुप्रथा कैं दूर करब अछि। आशा अछि जे एहि नाटकक पाठ एवं मंचनसँ कतेको पाठक एवं दर्शक प्रेरित भऽ तिलक–दहेज कैं विरोध कयने हेता।

निष्कर्षतः 'लेटाइत आँचर' नाटकक रचना 47 वर्ष पूर्व 1976 ई0 मे पं0 सुधांशु 'शेखर' चौधरी कयने छथि। एहि नाटकक कथा–वस्तु तिलक–दहेज विरोधी अछि। ई एकटा सामाजिक नाटकक संग ऐतिहासिक नाटक सेहो अछि। एहि नाटकसँ ज्ञात होयत अछि जे तिलक–दहेज रुपी कुप्रथा वर्तमाने टा मे नहि ई 50 वर्ष पूर्वो एहिना छल। मोदनाथक विरोधक उपरांत आर्दश कथा स्थिर होयत अछि। जाहिसँ समाजमे एकटा नीक संदेश पहुँचैत अछि। अतः एहि नाटकक कथा–वस्तु ठोस एवं सुसंबन्ध अछि।

संदर्भ ग्रंथः–

(1) चौधरी, पं0 सुधांशु 'शेखर'. 'आत्मकथ्य'. लेटाइत आँचर. दोसर सं0, शेखर प्रकाशन, पटना, 1991.
(2) चौधरी, पं0 सुधांशु 'शेखर'. लेटाइत आँचर. दोसर सं0, शेखर प्रकाशन, पटना, 1991, पृ0–3.
(3) तत्रैव, पृ0–31.
(4) तत्रैव, पृ0–21.
(5) तत्रैव, पृ0–1.
(6) तत्रैव, पृ0–30.

सहायक ग्रंथः–

(1) सिंह, डॉ0 प्रेमशंकर. मैथिली नाटक परिचय. मैथिली अकादेमी, पटना, 1981.
(2) मिश्र, डॉ0 लेखनाथ. मैथिली नाटकक उद्भव आओर विकास. पुनर्मुद्रण, श्रीमती हीरा देवी, पटना, 2012.
(3) झा, देवकांत एवं दिनेश कुमार झा (सम्पा0). मैथिली नाटकक विकास. पुनर्मुद्रण, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2015.

31.यात्रा साहित्य में माला वर्मा ओर प्रीति सेनगुप्ता का योगदान

–सागर देसले
शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ोदा, गुजरात।

यात्रा सदैव मानव मन में नवीन रोमांच और जिज्ञासा का संचार करती रही है। जब भी प्रकृति ने अपने सौंदर्य की छटा बिखेरी है, तब इंसान उस आकर्षण से अछूता नहीं रह सका। प्रकृति के विविध रंगों और रूपों को निहारने की इच्छा इतनी प्रबल रही है कि, व्यक्ति को घर की स्थिरता और आराम में भी चैन नहीं मिला। विश्व के प्रसिद्ध यात्री भी प्रकृति की इस मोहक माया से स्वयं को बचा नहीं पाए। यात्रा मनुष्य के भीतर जमी हुई नीरसता को समाप्त करने का कार्य करती है, और एक नवीन ऊर्जा व उत्साह से उसे भर देती है। कल्पना की उड़ान भरना, मानव की आदिकाल से चली आ रही प्रवृत्ति रही है। जब उसने प्रकृति के ऊर्जावान रूप को देखा, तब एक ही स्थान पर टिके रहने वाला व्यक्ति भी गतिशील होने को प्रेरित हुआ। वर्तमान में जब भी प्रकृति अपना सौंदर्य उकेरती है, तो मनुष्य उसे देखने को उतावला हो उठता है। अनेक लोग ऐसे भी हुए, जो इस आकर्षण के सम्मुख अपने को रोक न सके और सतत यात्रा करते हुए विश्व के श्रेष्ठतम यायावर कहलाये। पुरुष यात्रा लेखक तो कई हुए, लेकिन महिला यात्रा साहित्यकारों ने भी यात्रा विधा को समृद्ध करने का कार्य किया है। इस कड़ी में 'माला वर्मा' और 'प्रीति सेनगुप्ता' का नाम अत्यंत सराहनीय है। माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता यात्रा साहित्य की एकमात्र ऐसी लेखिकाएं हैं, जिन्होंने पृथ्वी के दोनों छोर यानी उत्तर ध्रुव एवं दक्षिण ध्रुव पर अपने कदम रखे हैं।

माला वर्मा : हिंदी साहित्य में यात्रा लेखन से ख्याति प्राप्त लेखिका वाला वर्मा ने जीतने देशों की यात्राएं की उतनी आज तक किसी भी साहित्यकार ने नहीं की होगी इस संदर्भ में डॉ छोटू राम मीणा की कहते है, "यात्रा संस्मरण में माला वर्मा एक ऐसा नाम है, जिसने पुरुष संस्मरणकारों से ज्यादा इस विधा को समृद्ध किया है।"[1] माला वर्मा जी के अब तक चौबीस यात्रावृत्तांत प्रकाशित हो चुके हैं। यह उनके निरंतर लेखन की प्रमाणिकता और गंभीरता को दर्शाता है। उनकी पहली कृति 'यूरोप यात्रा संस्मरण' (2002) से लेकर 'कोस्टल इटली' (जनवरी 2025) तक की लेखकीय यात्रा उनकी व्यापक भौगोलिक यात्राओं, सांस्कृतिक अवलोकनों और विविध रोमांचक अनुभवों को सामने लाने की क्षमता को प्रमाणित करती है। "यात्रा की शुरूआत एक पर्यटक के रूप में करती हैं। लेकिन यात्रा घुमक्कड़ की तरह करती हैं। जिन देशों में आपने यात्राएँ की हैं उनमें आप एक भारतीय यात्री के लिये अँगुली पकड़कर चलाने वाली निर्देशिका या गाइड के जैसा रचना देने का काम किया है। आप जिस देश में गई उस देश के भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, आर्थिक विवरण

को अपने पाठकों के लिये वयां कर देती है।"[2] माला जी की यात्राओ में स्थानीय जन–जीवन की धड़कन है। आम आदमी के जीवन के सुख–दुख, संघर्ष, आशा–निराशा, रिश्तों के उतार–चढ़ाव और मनोवैज्ञानिक उलझनों को उन्होंने न केवल संवेदनशीलता के साथ, बल्कि एक गंभीर पर्यवेक्षक की दृष्टि से प्रस्तुत किया है। यही वजह है कि उनके यात्रा के तत्व सिर्फ काल्पनिक नहीं रहते, बल्कि जीवंत घटना बनकर पाठकों के सामने आते हैं।

सामाजिक दृष्टि से माला वर्मा के लेखन में नास्तिकता के दर्शन होते है। उन्होंने सामाजिक ढकोसलों, रूढ़ियों, पाखंडों और धार्मिक अंधविश्वासों की भी आलोचना की है। यह उनके तार्किक सोच और समाज सुधारवादी दृष्टिकोण को उजागर करता है। साथ ही, उन्होंने इंसानी रिश्तों की जटिलताओं, पारिवारिक मूल्यों और संबंधों के द्वंद्वों को गहराई से स्पर्श किया है। लेखिका की दृष्टि केवल भावनात्मक नहीं है, बल्कि यथार्थपरक और वस्तुनिष्ठ है। उन्होंने स्थानीय जन के दुख–दर्द और जीवन संघर्ष को यात्रा के केंद्र में रखा है। माला वर्मा की लेखनी सहज, प्रांजल और जीवंत है। यही भाषा की सहजता पाठक को उनसे जोड़ती है। अंततः, माला वर्मा का कथा साहित्य जीवन के विविध पहलुओं का यथार्थ और सजीव चित्रण है। उन्होंने समाज, संस्कृति, रिश्ते, और परंपरा इन सबको मिलाकर यात्रा की एक ऐसी दुनिया रची है, जो हिंदी यात्रा–साहित्य को समृद्ध करते हुए, पाठकों को आत्मावलोकन और चिंतन के लिए प्रेरित करते रहेगीं।

प्रीति सेनगुप्ता :

मूल रूप से प्रीति सेनगुप्ता 'गुजराती भाषा' की यात्रा लेखिका है। वह नॉर्थ पोल पर जाने वाली पहली भारतीय महिला है। प्रीति जी ने अब तक 'एक सौ सोलह' (116) देशों की यात्राएं कर ली है। डॉ. बिपिन चौधरी कहते है– "उनकी रचना को किसी के समर्थन या संरक्षण की आवश्यकता नहीं है। उनकी रचना ही उनकी असली पहचान बन जाती है।"[3] प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य की सबसे बड़ी खासियत यह है कि, लेखिका नए परिवेश में जब जाती है तो वहां के स्थानीय लोगों से मिलना, उनकी भाषा को सुनना, सीखने के प्रयास करना, उनके समाज को उनकी संस्कृति को जानने की कोशिश करना, उनके जीवन संदर्भ को समझने का प्रयास करना। उनके संस्कृति–परिवेश को जानने का प्रयास लेखिका करती है। लेखिका का मानना है कि हमें पहले से किसी भी स्थान की धारणा नहीं बनानी चाहिए। किसी भी स्थान को अच्छे से जानने के लिए वहां दो या दो से अधिक बार जरूर जाना चाहिए। इस तरह लेखिका जिस किसी देश में जाती है, वहां की संस्कृति, वहां के लोगों का जीवन का बहुत ही बारीकी से अध्ययन करती है।

डॉ. बिपिन चौधरी आगे बताते है, "प्रीति सेनगुप्ता ने 1986 से 2005 तक पृथ्वी के सात महाद्वीपों की अपनी यात्रा पर सत्रह पुस्तकें लिखी हैं, जो हमें विश्व भ्रमण पर ले जाती हैं। ये यात्राएं जितनी रोमांचक और साहसिक हैं, इन पर लिखी पुस्तकें भी उतनी ही दिलचस्प हैं।"[4] लेखिका ने पृथ्वी के सातों खंड की यात्रा कर ली है। जब लेखिका ने उत्तर ध्रुव की यात्रा सम्पन्न की थी वहां जाकर आने के बाद उन्होंने अपनी स्थापना दी, कि मैं दुनिया के साढ़े सात खंड पर जाकर आई हूं। यह उनकी अपनी स्थापना है, प्रीति सेनगुप्ता की बीस यात्रावृत्तांत उपलब्ध है। सामान्यतया ऐसा देखा जाता है की, लोग यात्रा पर जाते है तब अपने साथ किसी को ले जाना पसंद जरते है इसके पीछे कई कारण है, सुरक्षा, डर, अंजान लोग, नया परिवेश वगेरे। परंतु प्रीति जी इन सब से बिना किसी चिंता के, बिना किसी प्लान के अकेले निकल पड़ती है, यह उनके अंदर के साहसिकता का गुण पता चलता है। पुरुषों को आमतौर पर यात्रा में साथियों की ज़रूरत पड़ती है, जबकि प्रीति सेनगुप्ता अकेली, अनजान देशों में, बिना किसी सहारे, केवल एक नक्शे के सहारे निकल पड़ती हैं। यह केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि मानसिक और सांस्कृतिक सीमाओं को पार करने का संकेत है। प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य मे विविध आयाम देखने को मिलते है। उन्होंने साहित्य, स्थापत्य, वहां की आबोहवा को लेकर लिखा। प्रकृति का वर्णन उनके प्रत्येक यात्रा वृत्तान्त मे देखने को मिलता है। उन्होंने साउथ एशिया को लेकर लिखा, यूरोप पर लिखा, अमेरिका पर लिखा, अरब कंट्रीस पर लिखा, जापान जैसे देशों को लेकर लिखा, ऑस्ट्रेलिया महादीप पर लिखा। अफ्रीका के देशों पर लिखा। इतना वैविध्य प्रीति सेनगुप्ता के साहित्य मे देखने को मिलता है।

निष्कर्ष–

वर्तमान में माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता ने यात्रा साहित्य को हिंदी जगत में विचारशीलता, शोध और अनुभव की गहराई दी। उन्होंने इसे मनोरंजन की बजाय ज्ञान, समझ और जागरूकता का स्रोत बनाया है। वे सिर्फ यात्रा लेखक नहीं, बल्कि एक घुमक्कड़ मनीषी भी है, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से लाखों पाठकों को न केवल नई दुनिया दिखाई, बल्कि सोचने का नया दृष्टिकोण भी दिया। आज के युवा लेखकों एवं पाठकों के लिए माला वर्मा एवं प्रीति सेनगुप्ता का लेखन प्रेरक तथा प्रासंगिक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

(1)डॉ. छोटू राम मीणा, पुष्पगंधा, अगस्त–अक्टूबर 2020, पृ. 23(2)वही, पृ.23 (3)डॉ. बिपिन चौधरी, प्रवासिनी प्रीति सेनगुप्ता, पार्श्व प्रकाशन अहमदाबाद–2013, पृ. 221(4)वही, पृ.221

मूल्य - 30/-

ISSN 2320-7728

मई 2022 - अक्तूबर 2022

पुष्पगंधा

साहित्य कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

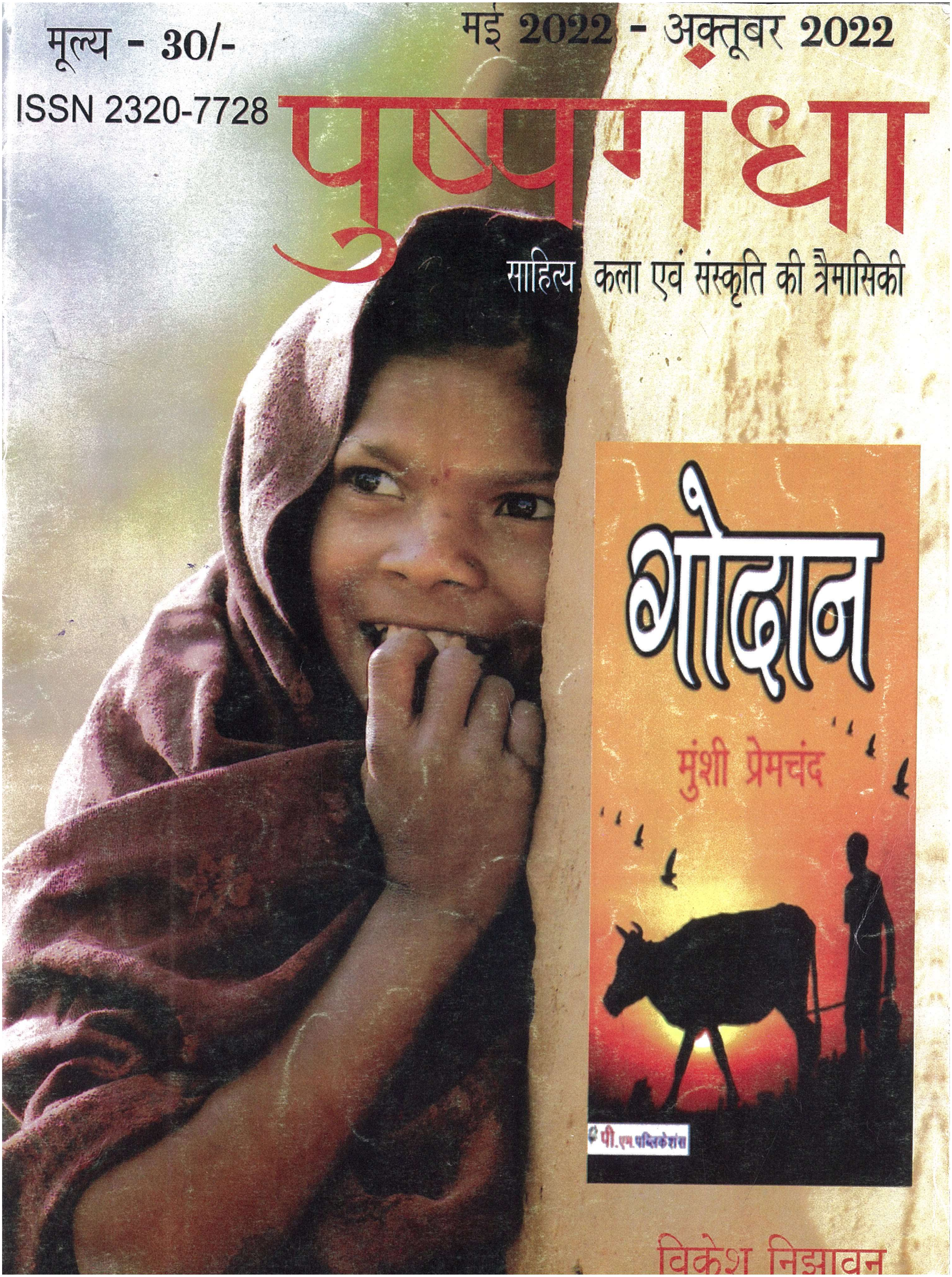

विकेश निझावन

हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा
लाला देशबन्धु गुप्त सम्मान से पुरस्कृत

पुष्पगंधा

ISSN 2320 – 7728

साहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

वर्ष : 13 अंक : 1

मई 2022 – अक्तूबर 2022

मूल्य – 30/- वार्षिक – 120 रू

संरक्षक : प्रेमलता निझावन वडेरा

संपादक : विकेश निझावन

उप–संपादक : अरुण 'विश्वास' निझावन

सह–संपादक : इन्दु भाटिया

सम्पादकीय मंडल : गुलशन आनन्द, चन्द्रकान्ता अग्निहोत्री, श्याम चूड़ामणि, डा. सुभाष सैनी, सीमा गुप्ता

सम्पादकीय सम्पर्क : 557 – बी, सिविल लाइन्स, आई. टी. आई. बस स्टॉप के सामने, अम्बाला शहर – 134003 'हरियाणा'

मो. 9896100557, 8168724620

557 – B, Civil Lines, Opposite I. T. I. Bus Stop, Ambala City – 134003, Haryana, 9996841500

Email - vikeshnijhawan@rediffmail.com
pushpgandhaambala@rediffmail.com

प्रबन्धकीय कार्यालय : खुराना बुक हाउस, टी–117, श्री निवास पुरी, नई दिल्ली।

'केंद्रीय हिंदी संस्थान' आगरा से सहयोग प्राप्त

आवरण चित्र :

शब्द संयोजन : अरुण निझावन

रेखांकन एवं छायांकन प्रस्तुति – मनोहर काजल, सुमित राजौरा, रिया भाटिया, डॉ. अनुकृति श्रीवास्तव

प्रतिवर्ष अक्तूबर, जनवरी, अप्रैल एवं जुलाई की 15 तारीख को प्रकाशित

पुष्पगंधा में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से सम्पादक, प्रकाशक और मुद्रक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक विकेश निझावन द्वारा प्रोग्रेसिव प्रिन्टर्ज़, शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित एवं 557–बी, सिविल लाइन्स, आई. टी. आई. बस स्टॉप के सामने, अम्बाला शहर–134003 'हरियाणा' से प्रकाशित।

सम्पादक : विकेश निझावन

पुष्पगंधा सहयोग राशि

Subscription Details
With Registered Post

For 3 years – Rs. 700/-

For 6 years – Rs. 1400/-

For 10 years – Rs. 2500/-

For 20 years – Rs. 5000/-

For Whole Life – Rs. 10000/-

Free books of Rs.1000/-
With Whole Life Subscription

International Subscription
For 3 years - 100 U.S. Dollars

Cheque, Demand Draft, Money Order payable at–
PUSHPGANDHA AMBALA

Net Banking:
Account Name – PUSHPGANDHA
Bank – CENTRAL BANK OF INDIA
Branch – RAILWAY ROAD, AMBALA CITY, HARYANA
Account Number – 3111238132
IFSC Code – CBIN0280376

ISSN 2320– 7728

पुष्पगंधा

साहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

2. अनुक्रम

3. सम्पादकीय

5. चिट्ठी मिली

7. डॉ. कमल किशोर गोयनका ः आलेख ः गोदान ः रचना काल एवं...

28 . चंद्रकांता अग्निहोत्री ः साक्षात्कार ः राजशेखर व्यास

32 . हिमांशु जोशी ः कहानी ः अन्ततः

36 . डॉ रश्मि खुराना ः संस्मरण ः मसर्रतबाजी की वापसी

38 . डॉ. अनूप सिंह ः कहानी ः विदाई का कोरस

41. गजेन्द्र रावत ः कहानी ः उड़न छू

44 . रमेश प्रसुन ः गज़लें

45. राजवंती मान ः कविताएँ तथा पुस्तक समीक्षा

48. सुमित दहिया ः कविताएँ

50. रविन्द्र गासो ः आलेख

52. सुषमा मुनीन्द्र ः यात्रा वृत्तांत

58. अलका कांसरा ः संस्मरण

60. माया कन्नोई, उषा किरण ः कविताएँ

61. सुदर्शन प्रियदर्शिनी ः कहानी ः कोरोना

63. राजा सिंह ः कहानी ः समयान्तर

72. संजय कुमार सिंह ः कहानी ः दीवार

75. सरोजिनी नौटियाल ः समीक्षा ः सुधा जुगरान की कहानियाँ

76. प्रियंका त्रिपाठी ः लघुकथा

77. राम नगीना मौर्य ः कहानी ः तुमने कहा जो था

81. जयपाल ः कविताएँ

82. सागर देसले ः शोधपत्र ः प्रीतिसेन गुप्ता की दृष्टि में गाँधी जी

84. केशव शरण ः गज़लें

85 . मदन गुप्ता सपाटू ः हास्य–व्यंग्य

86. याद राम शर्मा, मोहन दास 'फकीर' ः कविताएँ

87. रेखा भाटिया ः कविताएँ

88. अमृता अग्रवाल ः कविताएँ

89. मनोज शाह 'मानस' ः कविता

90. दिनकर कुमार– कविताएँ

91. महेश कुमार केशरी ः लघुकथाएँ

92. कान्ता घिल्डियाल ः कविता

93. चंद्रकांता ः फुहार, दिलीप सिंह दीपक

94 मोतीलाल दास ः कविताएँ

95. विकेश निझावन ः कविताएँ

96. महाभारत रिसता है ः पुस्तक समीक्षा

97. उम्मीद की लौ ः पुस्तक समीक्षा

98. खिडकी से झांकता गुलाब ः सरला भारद्वाज

100. स्टेपल्ड पर्चियाँ ः पुस्तक समीक्षा

102. शब्दों की परछाइयाँ ः पुस्तक समीक्षा

103. ढाई आखर प्रेम के ः पुस्तक समीक्षा

104. समाचार

105. कंबोडिया वियतनाम ः पुस्तक समीक्षा

108. रॉकी अहमद सिंह ः पुस्तक समीक्षा

111. सवाल दर–सवाल ः पुस्तक समीक्षा

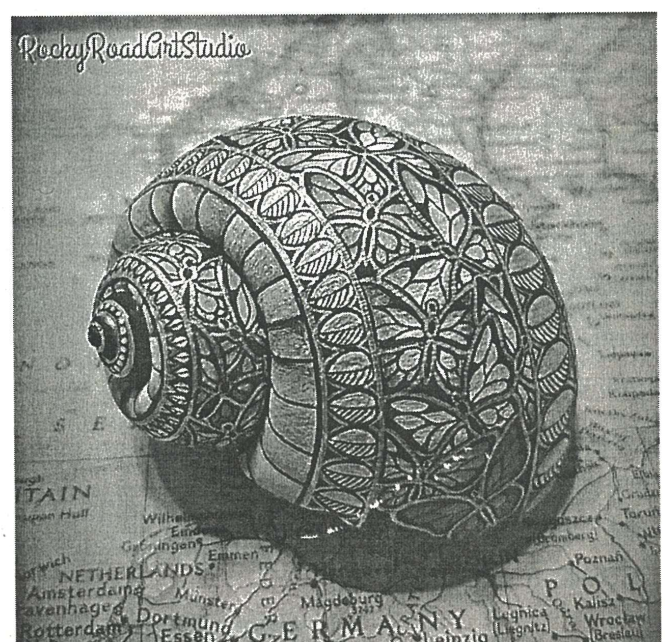

प्रीति सेनगुप्ता की दृष्टि में गांधीजी (दक्षिण अफ्रीका यात्रा के संदर्भ में)

सागर देसले

साहित्य की एक अलग विधा यात्रा साहित्य के माध्यम से हम वीर सपूतों को याद कर रहे हैं, लोग आज़ादी की लड़ाई को कविताओं में, आत्मकथाओं में, नाटक में, निबंध में, उपन्यासों और कहानियों में अप्रत्यक्ष रूप से ढूंढते हैं, लेकिन यात्रा साहित्य में इस तरह की बाते हों, यह बहुत कम देखने को मिलता है। किसी भी यात्री का, स्थान विशेष, व्यक्ति विशेष के साथ एक गहरा संबंध होता है। और अगर उस स्थान विशेष या व्यक्ति विशेष में उसे आज़ादी की लड़ाई के कोई प्रमाण मिलें, या उस घटना या प्रसंग का आज़ादी की लड़ाई के साथ कोई संबंध हो, तो वह उससे गहरे रूप में जुड़ जाता है। और वह पूरी घटना उसकी आँखों के सामने एक के बाद एक दृश्य के रूप में गुजरते जाते हैं। और वह प्रत्येक दृश्य को शब्द का रूप देना चाहता हो, यह एक यात्रा लेखक की ललक होती है, जिसे वह शब्दों का रूप देता है।

प्रस्तुत शोधपत्र में गुजराती यात्रा साहित्य की प्रसिद्ध महिला लेखिका "प्रीति सेनगुप्ता" के "सुत्तर स्नेहना" यात्रा के माध्यम से भारत की आज़ादी की नींव रखने वाले राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी को याद कर रहे हैं। गाँधीजी को सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करने वाली वह घटना सात जून 1893 को दक्षिण अफ्रीका के पीटरमैरिटजबर्ग रेलवे स्टेशन पर घटी थी। जिसमें उन्हें अश्वेत होने के कारण नश्ली भेदभाव का शिकार होना पड़ा था।

"एक श्वेत व्यक्ति द्वारा गाँधीजी को धक्का देकर ट्रेन से नीचे उतारने की घटना"१।

उस दिन गाँधीजी के पास ट्रेन का प्रथम श्रेणी का टिकट था, वो अपनी सीट पर बैठ गये। यहाँ से ट्रेन पीटरमैरिटजबर्ग स्टेशन पहुँची ही थी, तभी एक श्वेत व्यक्ति ने उन्हें थर्ड क्लास डिब्बे में जाने के लिए कहा, गाँधीजी के मना करने पर उस व्यक्ति ने उन्हें धक्का देकर ट्रेन से नीचे उतार दिया। कड़कड़ाती ठंड में वो स्टेशन के वेटिंग रूम में पहुँचे, उन्होंने वो रात जागकर बिताई, एक पल सोचा कि बिना प्रतिक्रिया दिये भारत चले जाना चाहिए, लेकिन मन मे तुरंत विचार आया कि नहीं! दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के खिलाफ हो रहे अत्याचारों को रोकने के लिए लड़ना चाहिए। यह उन पर पहला नश्लभेदी प्रहार था। इतना ही नहीं दक्षिण अफ्रीका में कई होटलों में उनके प्रवेश को वर्जित कर दिया गया। इस तरह की बहुत सी घटनाओं में से एक यह भी थी, जिसमें अदालत के न्यायाधीश ने उन्हें अपनी पगड़ी उतारने का आदेश दिया था, जिसे उन्होंने अमान्य कर दिया। इस तरह के अन्याय जिसे वह सहन नहीं कर पा रहे थे, यहीं से उन्होंने आंदोलन के बीज बो दिए थे, तब गाँधीजी केवल 21 वर्ष के थे। गाँधीजी बचपन से जहाँ कहीं अन्याय देखते थे, उसके खिलाफ आवाज़ उठाते थे। वो हिंसा के सख्त विरोधी थे। वो अहिंसा में मानने वाले थे। ये सारी घटनाएँ गाँधीजी के जीवन मे एक मोड़ बन गयीं, और तत्कालीन सामाजिक अन्याय के प्रति जागरूकता का कारण बनीं, तथा सामाजिक सक्रियता की व्याख्या करने में मददगार सिद्ध हुई। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों पर हो रहे अन्याय को देखते हुए गाँधी ने अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ एक प्रखर आवाज़ बुलंद की, जिससे भारतीयों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाये तथा, वे स्वयं की स्थिति को भी मजबूत कर पाये। उनके साथ इस तरह के अमानवीय व्यवहार का उनके मानस पर बुरा प्रभाव पड़ने की बजाय उन्होंने इसे अपनी ताकत बनाया, ताकत भी किस रूप में? सत्य के लिये लड़ना, आवाज़ उठाना, पर उसका रूप, हिंसक न होकर अहिंसक होना चाहिए। और यहीं से शुरू होती है उनकी विदेशी भूमि में सत्याग्रह की शुरुआत।

"1904 में पहली बार गाँधीजी ने भारतीयों के हक के लिये, दक्षिण अफ्रीका की सरकार का विरोध किया"२ ई.स. 1904 में दक्षिण अफ्रीकी सरकार ने देखा कि भारतीय फेरीवाले, लारिवाले, और जमीन पर बैठकर फल-सब्जियाँ बेचने वाले लोगों की संख्या बढ़ रही थी। जोहानिसबर्ग शहर अब बड़ा होने लगा था। तब यह जगह अधिक महत्वपूर्ण मानी जाने लगी थी। तत्कालीन सरकार ने प्लेग की बीमारी फ़ैलने का बहाना बताकर सब जगह आग लगवा दी और भारतीयों को वहाँ से चले जाने को कहा। इस पूरी घटना की जानकारी भारतीय व्यपारियों ने गाँधीजी को दी, गाँधीजी ने उन्हें अपने साथ लेकर सरकार का विरोध किया, और सरकार से उन छोटे-बड़े व्यापारियों को शहर में व्यापार के लिये दूसरी कहीं सुरक्षित जगह मिले ऐसी मांग की। तत्कालीन सरकार को गाँधीजी के सामने झुकना पड़ा और सरकार ने उन व्यापारियों को व्यापार के लिये जगह दी साथ ही उन व्यापारियों को आर्थिक सहायता भी दी। ऐसे शुरू होता है विदेशी धरती पर भारतीयों के लिए आज़ादी के प्रयास और अपने लोगों को जागृत करने का कार्य।

"महात्मा गाँधी की आत्मनिर्भर भारत की सोच"३

कहना उचित ही होगा कि आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व ही गाँधी जी को यह ज्ञात था कि देश के तरक्क़ी के लिए, देश की प्रगति के लिए, देश को विकसित बनाने के लिए, देशवासियों को स्वयं अपनी आवश्यक वस्तुओं का निर्माण करना पड़ेगा। वह यह जान गए थे कि एक राष्ट्र तभी संपन्न होगा जब वह अपनी ज़रूरत की चीजें दूसरे राष्ट्र से न लेकर स्वयं उसका निर्माण करे। उन्होंने अपने बेटे को दक्षिण अफ्रीका बुलाकर खेती करना सिखाया, उनके इस कार्य से प्रभावित होकर भारतीय जनता ने अपने बच्चों के लिए भारत से शिक्षक बुलाये, अपने लोगों के लिए अलग से स्कूलों की स्थापना की, भारत से डॉक्टर बुलाये, वकील बुलाये, अपने संस्थान स्थापित किये। अपने सिनेमा को अधिक महत्व देने लगे, इस कारण से भी अब भारतीयों पर अश्वेत नीति का असर कम हो गया था, भारतीय अपनी जरूरत की चीज़ों की स्थापना करने लगे। वर्तमान

में भारतीयों की स्थिति यह है कि वह हर क्षेत्र में सब से आगे है। चाहे वह राजनीति का क्षेत्र हो, खेल क्षेत्र हो, सिनेमा हो, भारतीय हर क्षेत्र में अव्वल हैं। भारत में भी गांधीजी ने स्वतंत्रता आंदोलन को सहयोग देने के लिए पुरूषों और महिलाओं को प्रतिदिन खादी के लिए सूत कातने में समय बिताने के लिए कहा। गाँधी और उनके अनुयायियों ने सूत बुनने के अभ्यास को अपनाया, और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया और इसका पूरा श्रेय महात्मा गाँधी को जाता है, जिन्होंने इतने वर्षो पहले ही आत्मनिर्भर भारत का सपना देखा था।

1915 में गाँधीजी विदेश से पढ़कर भारत आये, तब सबसे पहले उन्होंने पूरे भारत की यात्रा की। इस यात्रा का एकमात्र उद्देश्य था समाज में चल रही कुरीतियों, शिक्षा का अभाव, इनके कारणों को समझकर इसके मूल तक जाना चाहते थे। उसके बाद उन्होंने यहाँ के किसानों, श्रमिकों और नगरीय श्रमिकों को अत्यधिक भूमि कर और भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाने के लिये एकजुट किया। उन्होंने देशभर में दरिद्रता से मुक्ति दिलाने, महिलाओं के अधिकारों का विस्तार, धार्मिक एवं जातीय एकता का निर्माण व आत्मनिर्भरता के लिये अश्पृश्यता के विरोध में अनेक कार्यक्रम चलाये। इन सबमें विदेशी राज से मुक्ति दिलाने वाला स्वराज की प्राप्ति वाला कार्यक्रम ही प्रमुख था। गाँधी जी ने ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों पर लगाये गये लवण कर के विरोध में **1930** में नमक सत्याग्रह (दांडीकूच), और इसके बाद **1942** में अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन से विशेष ख्याति प्राप्त की। भारत भ्रमण के दौरान गाँधीजी ने पाया कि शिक्षा - व्यवस्था में जो लोग थे, वह जब तक आज़ादी की लड़ाई में नहीं जुड़ेंगे, तब तक हमें आज़ादी नहीं मिल सकती। यानी पढ़े-लिखे लोगों का आज़ादी की लड़ाई में हिस्सा लेना ये बहुत जरुरी हो गया था। क्योंकि गाँधी जी जानते थे, अंग्रेज पढ़ी-लिखी प्रजाति के थे, उनके सामने सभी पैमाने पर लड़ना बहुत जरूरी था ।

गाँधीजी जानते थे आज़ादी की लड़ाई कोई व्यक्तिगत दायित्व नहीं है, यह सामुहिक दायित्व है, इस लड़ाई को सभी को मिलकर समाज के हर क्षेत्र के लोगों को मिलकर लड़ना बहुत जरूरी था। इसलिए गाँधीजी ने युवाओं, महिलाओं, समाजसेवी, सरकारी पदों पर कार्यरत अधिकारियों एवं साहित्यकारों से आह्वान किया कि वह इस आज़ादी की लड़ाई में बढ़-चढ़कर हिस्सा लें। गाँधीजी ने साहित्कारों से आह्वान किया, आपका साहित्यिक विषय एकमात्र हो, भारत की पुरातन परंपरा, संस्कृति और आज़ादी की लड़ाई लड़ने की संचेतना जगाना होना चाहिए।

"तत्कालीन समय के हिंदी के बहुत ही प्रसिद्ध "आलोचक एवं इतिहासकार रामकुमार वर्मा उनका एक बहुत ही ख्याति प्राप्त संस्मरण, जो महात्मा गाँधी नाम से लिखा गया है।"४

इसमें रामकुमार वर्मा ने अपने बचपन के एक वाक्या का वर्णन किया हैं, उन दिनों गाँधी जी खिलाफत, आंदोलन एवं असहयोग आंदोलन चला रहे थे, इसमें उन्हें युवाओं की बहुत जरूरत थी। गाँधी जी जानते थे युवावर्ग जो है, वह शारीरक रूप तथा मानसिक रूप से बहुत मजबूत होता है, इसलिये उनका इस आंदोलन में जुड़ना बहुत जरूरी है। गाँधीजी ने प्रत्येक प्रदेशों में स्कूलों-कॉलेजो में अपने प्रतिनिधि भेजे, इन प्रतिनिधियों को एक संदेश देने के लिए भेजा गया, कि बच्चों को राष्ट्र की आज़ादी के लिए आंदोलन में जुड़ने का आह्वान करना।

मध्यप्रदेश में शौकतअली प्रतिनिधि बनकर रामकुमार वर्मा के स्कूल में जाते हैं, शौकतअली अपने भाषण में कहते हैं कि, इस आज़ादी की लड़ाई में युवाओं की क्या जरूरत है? ओर फिर अंत में पूछते हैं, आप लोगों मे से कौन इस आज़ादी की लड़ाई में जुड़ना चाहता है? तब सिर्फ रामकुमार वर्मा अपना हाथ ऊपर करते हैं। उनके पिताजी डेप्यूटी कलेक्टर थे, उनके भाई उस ज़िले के सबसे बड़े वकील थे, ओर रामकुमार वर्मा तब केवल नोवीं कक्षा में थे, रामकुमार वर्मा में अपने संस्मरण महात्मा गाँधी में इस बात का ज़िक्र किया है कि गाँधीजी के आह्वान पर उन्होंने अपनी पढ़ाई-लिखाई छोड़ दी और आज़ादी के आंदोलन में जुड़ गये।

तत्कालीन समय के साहित्यकारों में दिनकर हो, सोहनलाल द्विवेदी हो, माखनलाल चतुर्वेदी हो, जयशंकर प्रसाद हो, मैथलीशरण गुप्त, इन सभी ने महात्मा गांधी के आह्वान पर युवावर्ग को समाज के इस आंदोलन से जोड़ने के लिए अपने साहित्यिक विषय में देशभक्ति की रचनाओं को अधिक महत्व दिया। गांधीजी ने अछूतों का उद्धार किया, उन्हें हरिजन नाम दिया, भाषा, जाती और धर्म संबंधी भेदों को समाप्त करने का आजीवन प्रयत्न किया, स्वेदशी वस्तुओं के उपयोग पर जोर दिया। सूत कातने, सभी धर्मो को आदर से देखने ओर सत्य-अहिंसा को जीवन में अपनाने की शिक्षा दी। उन्होंने पूरी दुनिया को शांति का संदेश दिया।

"दक्षिण अफ्रीका में रह रहे भारतीयों द्वारा गाँधीकुच समिति तथा गाँधी स्मारक हॉल का निर्माण"५

इस संस्था का मुख्य कार्य गाँधी के आदर्शवाद तथा यथार्थ वाद एवं उनके विचारों नीति नियमों को जीवित रखने और उनका प्रचार प्रसार करना है, जिस रूप में दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों ने, अफ्रीकन लोगों ने, गाँधी स्मारक हॉल बनाया है एवं गांधीजी द्वारा निर्मित उनके आश्रमो को संजोकर रखा हैं, उसी तरह भारत मे भी हमने गाँधी साबरमती आश्रम, बिड़ला हाउस, इन्हें संभालकर रखा हुआ है, जिसका एकमात्र उद्देश्य है, इसे देखने आने वाले लोगों को इन आज़ादी के सपूतों को याद किये जाना, तथा उनके परिश्रम भरे जीवन से प्रेरणा लेना है, आने वाली पीढ़ी के मन मे यह भाव हों कि आज़ादी के इन सपूतों के कारण ही हमें खुली सांस लेने का अवसर मिला है। यही तो इस आज़ादी का अमृतमहोत्सव मनाने का मुख्य उद्देश्य है। दक्षिण अफ्रीका और भारत में विभिन्न अवसरों पर कई वर्षो तक उन्हें कारागृह में भी रहना पड़ा। गांधीजी ने सभी परिस्थितियों में अहिंसा और सत्य का पालन किया और सभी को इनका पालन करने के लिये वकालत भी की। उन्होंने साबरमती आश्रम में अपना जीवन बिताया और परम्परागत भारतीय पोशाक धोती व सूत से बनी शाल पहनी जिसे वे स्वयं चरखे पर सूत कातकर हाथ से बनाते थे। उन्होंने सादा शाकाहारी भोजन खाया और आत्मशुद्धि के लिये लम्बे-लम्बे उपवास रखे।

गाँधीजी विदेश से पढ़कर आये थे, वह अपना कैरियर छोड़कर, व्यक्तिगत हित छोड़कर, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओ को

छोड़कर, तरक्क़ी को परे ऱखकर राष्ट्र के प्रति अपने जीवन को समर्पित कर दिया, वह चाहते तो बहुत अच्छा जीवन जी सकते थे, परंतु उन्होंने अपने राष्ट्र को अधिक महत्व दिया, ऐसे सच्चे महान देशसेवी को आज़ादी के अमृतमहोत्सव में याद करना उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि है, उनके बताये मार्ग से हम युवा दुनिया को और सुंदर बना सकते हैं, अगर उनके जीवन के बताये इतने गुणों मे से कुछ ही गुणों को हम अपने जीवन में उतारें तो हमारा भारत जरूर एक दिन विश्व गुरु बनकर रहेगा ।

संदर्भ-सूची

१. देश-देशावर - प्रीति सेनगुप्ता , प्रथम संस्करण, १९९८ (पृ. स. १००)

२. सुत्तर स्नेहना - प्रीति सेनगुप्ता , आर.आर.शेठनी कंपनी,२००५ (पृ. स.२३)

३. सुत्तर स्नेहना - प्रीति सेनगुप्ता , आर.आर.शेठनी कंपनी,२००५ (पृ. स.१०)

४. महात्मा गांधी (संस्मरण) - रामकुमार वर्मा, गद्य फुलवारी - सं. डॉ. शहाबुद्दीन शेख (पृ. स.४०)

५. सुत्तर स्नेहना - प्रीति सेनगुप्ता , आर.आर.शेठनी कंपनी,२००५ (पृ. स.१६)

हिंदी विभाग, कला संकाय
महाराजा सयाजीराव विश्विद्यालय, बड़ौदा।
96870-89896
सगर-hindiphd@msubaroda.ac.in

■

ग़ज़लें

केशव शरण

चमन में फूल क्या खिलते नहीं हैं
हमीं हैं जो कभी मिलते नहीं हैं
मुहब्बत हो गई अभियान जैसी
हमीं अभियान पर पिलते नहीं हैं
छुपाये हो कहाँ ख़ुद को न जाने
तुम्हारे सूत्र तक मिलते नहीं हैं
गली क्या सब नगर के शुष्क चेहरे
न पा छवि रसमयी खिलते नहीं हैं
झलक ही एक मिल जाये तुम्हारी
लगाकर ध्यान हम हिलते नहीं हैं

जोड़ लीजै कि सितारे कितने
आपके और हमारे कितने
कम न इक इंच हुई ये धरती
रह गये किन्तु नज़ारे कितने
मौज में फ़ौज नदी है दुख में
आ गये पास किनारे कितने
अंत में काम दिया बल अपना
काम आये न सहारे कितने
बस इधर और उधर से होते
सनसनीख़ेज़ इशारे कितने

किस तरह ख़ुशनसीब हो जाऊँ
मैं तुम्हारे क़रीब हो जाऊँ
कुछ मुझे प्यार की मिले दौलत
मैं न इकदम ग़रीब हो जाऊँ
गुट सराहें न शायरी मेरी
मैं वगरना अदीब हो जाऊँ
क्या अजब इस अजीब दुनिया में
मैं अजीबो-ग़रीब हो जाऊँ
सब तुम्हारे हबीब हो जायें
मैं सभी का रक़ीब हो जाऊँ

अश्क़ बरबाद नहीं करना है
इश्क़ को याद नहीं करना है
कम न नाशाद तबीयत अपनी
और नाशाद नहीं करना है
हुस्न का राज सितम सब सहना
एक फ़रियाद नहीं करना है
क्योंकि वीरान किया दिल उसने
क्या कि आबाद नहीं करना है
चाँद ऐ चाँद किया करता हूँ
आज शब बाद नहीं करना है

वाराणसी,
9415295137

(212)

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

हिन्दुस्तानी अकादमी, प्रयागराज के सयुंक्त तत्वाधान में आयोजित

त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय: छायावादी काव्य–धारा की कविता और महाकवि कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह की साहित्य साधना

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/ सुश्री/ श्रीमती/ डॉ0/ प्रो/ सागर अरुणभाई देसले

संस्थान का नाम हिंदी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा

दिनांक 28, 29, 30 अक्टूबर 2023 स्थान – राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,फाफामऊ, प्रयागराज (उ0प्र0) में आयोजित त्रिदिवसीय कार्यशाला में सहभागिता की तथा छायावादी काव्य–धारा की कविता और महाकवि कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह की साहित्य साधना विषय पर शोध पत्र/ वक्तव्य/अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया।

डा0. सत्यपाल तिवारी
निदेशक
मानविकी विद्या शाखा
उ0प्र0 राजर्षि को टण्डन विश्वविद्यालय
प्रयागराज

श्री डी. पी. सिंह
सचिव
हिन्दुस्तानी अकादमी
प्रयागराज

प्रो. शिव मोहन सिंह
संयोजक / महामंत्री
अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति
लखनऊ

Azadi Ka Amrit Mahotsav

NIMA GIRLS ARTS COLLEGE · GOZARIA ·

हिंदी साहित्य अकादमी, गांधीनगर
एवं
नीमा गर्ल्स आट्र्स कॉलेज, गोझारिया
(श्री गोझारिया केलवणी मंडल, गोझारिया संचालित)

के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

ગુજરાત સાહિત્ય અકાદમી

राष्ट्रीय परिसंवाद

27 सितम्बर, 2022

हिंदी-गुजराती यात्रा-प्रवासी साहित्य में मानवीय संवेदना

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री / श्रीमती / कु. सागर अरुणभाई देसले

संस्था श्री महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बडौदा ने नीमा गर्ल्स आट्र्स कॉलेज, गोझारिया द्वारा आयोजित "हिंदी-गुजराती यात्रा-प्रवासी साहित्य में मानवीय संवेदना" विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद (दिनांक : २७ सितंबर, २०२२) में ~~सत्राध्यक्ष~~ / ~~विषय-विशेषज्ञ~~ / ~~विषय-प्रवर्तक~~ / ~~सत्र-संचालक~~ / शोध-पत्र प्रस्तोता / ~~प्रतिभागी~~ के रुप में सक्रिय प्रतिभागिता की।

वक्तव्य / शोध-पत्र का विषय मालावर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

परिसंवाद संयोजक	परिसंवाद संयोजक	प्राचार्य
डॉ. धर्मेंद्रसिंह वाघेला	डॉ. सोमाभाई पटेल	डॉ. राजेन्द्रसिंह वाघेला
गुजराती विभाग	हिंदी विभाग	नीमा गर्ल्स आट्र्स कॉलेज,
नीमा गर्ल्स आट्र्स कॉलेज, गोझारिया	नीमा गर्ल्स आट्र्स कॉलेज, गोझारिया	गोझारिया-गुजरात